Written by कुमार सौवीर
Saturday, 20 January 2018 13:48

: □ □□□□□□, □ □□□□□, □ □□□□□, □□ □ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ : □□□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ : □□□-□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□, □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ : □□□□□□□□□□□ □□□□□□□-□□□□□- □□□ :

□□□□□ □□□□□□

Hindi News » Metro » Lucknow » Crime » Attributed Girl Student Has Left The House Twice

लखनऊः 2 बार घर से भाग चुकी है छात्र पर चाकू से हमला करने वाली छात्रा

नवभारत टाइम्स | Updated: Jan 19, 2018, 10:25AM IST

SUBSCRIBE NEWSLETTER

लखनऊ

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के त्रिवेणीनगर स्थित ब्राइट लैंड कॉलेज मामले में एक और खुलासा हुआ है। पहली के छात्र ऋतिक पर हमला करने

□□□□ : भाड़ में जा□ वकील, और ठेंगे में जा□ जज लोग□ जब बड़े दिग्□गज पत्रकार लोग मौजूद हैं, तो ऐसे लोगों की क्□या जरूरत□ नवभारत टाइम्स के पत्रकारों ने ब्राइटलैंड स्□कूल के मामले में □क बच्ची को न केवल चिन्हित कर लिया है, बल्कि उसे हत्या की अपराधी भी करार दे दिया है□ नवभारत टाइम्स ने अपने अखबार में लिख मारा है कि पहले भी दो बार घर से भाग चुकी है कक्षा-□क के छात्र पर चाकू से हमला करने वाली छात्रा□ यानी इसके बाद सारी चर्चा और बहस-मुबाहिसा की कोई गुंजाइश ही नहीं है□

जी हां, यह चेहरा है नवभारत टाइम्स अखबार का, जो खुद में संवेदनशीलता का समंदर का भ्रम पाले है□ हैरत की बात है कि अपनी आदत-शैली के तहत इस मामले में पुलिस ने कोई गहरी छानबीन नहीं की है□ उधर नवभारत टाइम्□स के इस पत्रकार ने भी यह पूरी खबर पुलिस के सूत्रों पर ही टिका लिया है□ खबर में इस रिपोर्टर ने किसी संबंधित व्यक्ति का कोई भी वर्जन नहीं लिया है□ केवल हियर □ंड से पर यह खबर लिखी गई है□ यह सोचने तक की जरूरत नहीं समझी गई है कि इस खबर का क्या असर पड़ेगा उस बच्ची पर, उस बच्ची के परिवार पर, या उसके मोहल्ले या समाज के आसपास पर□ क्या सोचेंगे लोग इस खबर को पढ़ कर□

आखिर किस आधार पर यह खबर लिखी गई कि इस बच्ची का इतिहास दो बार घर से भागने का है□ घर भागने का तर्क इस स्कूल के हादसे से कैसे जुड़ रहा है, भगवान जाने□ हैरत की बात है कि केस खबर को लिखने वाले रिपोर्टर को लिखने तक की तमीज नहीं जाहिर हो पा रहा है□

□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□□:- [□□□□ □□□□□□□]

जैसा कि मैं पहले ही कह चुका हूं कि घर छोड़कर भागने वाला कोई भी मासूम बच्चा, भले ही अपने परिवार के खिलाफ झंडा फहराते हु□ घर से भाग जाता है लेकिन कभी भी समाज के खिलाफ उसके मन में कोई आक्रोश नहीं होता है□ ऐसा बच्चा मूलत□ □क सरल निष्पाप स्वच्छ और दैवीय भाव समेटे होता है□ कहने की जरूरत नहीं कि हम ऐसे बच्चे को किसी देवी-देवता के अंश से कम नहीं मानते हैं□ कभी भी नहीं□

लेकिन ब्राइटलैंड स्कूल-कांड को लेकर लखनऊ की पत्रकारिता ने एक मासूम बच्चे के माथे पर हमेशा-हमेशा के लिए एक आपराधिक मोहर ठोंक दी है। लखनऊ के पत्रकारों ने साबित कर दिया है कि लखनऊ के ब्राइटलैंड स्कूल में पढ़ने वाली कक्षा 6 की बच्ची कोई मासूम बच्ची नहीं, बल्कि 12-13 बरस की हत्यारिन है। ऐसी हत्यारी, जो 7 बरस के बच्चे की हत्या की कोशिश तक कर सकती है।

पत्रकार की भूमिका क्या होती है, इस अखबार ने जूतों से कुचल दिया है। जरा अखबारों में छपी अखबारों की हेडिंग पर नजारा देखने का कष्ट उठाइये, और देखिए कि पहली के छात्र रितिक पर हमला करने वाले के संदेह में हिरासत में ली गई छात्रा स्वभाव से सामान्य नहीं है। अब जरा पूछो इस पत्रकार से, कि स्वभाव से सामान्य दिखने वाली बच्ची और असामान्य होने वाली बच्ची का ऐलान इस पत्रकार ने कैसे किया। किन-किन तर्कों के आधार पर पत्रकार ने यह ऐलान कर दिया कि यह बच्ची ही हमलावर है। केवल सुनी-कही बातचीत के आधार पर इस पत्रकार ने लिखा है कि छोटी बहन व परिवार के अन्य सदस्यों का स्वभाव सामान्य है। अच्छा आप यह बताइए पत्रकार जी, कि असामान्य और सामान्य के बीच इस परिवार को आपने कैसे खोजा। हकीकत यह है कि इस पत्रकार को उस छात्रा के घर के बारे में कोई भी जानकारी नहीं है। इतना ही नहीं, वह कभी उस बच्ची के घर नहीं गया। यानी यह सारा ही अरेंज-मैनेज्ड स्टोरी भर है।

यह काबिल पत्रकार लिख रहा है कि ब्लू व्हेल गेम की आशंका भी इस मामले में है। इस बच्ची के बारे में पत्रकार का कहना है उस छात्रा के शरीर पर कट के निशान मिले हैं, ऐसे में ब्लू व्हेल गेम की चपेट में आने की आशंका है। लेकिन इस पत्रकार को यही पता नहीं है कि ब्लू व्हेल में जूझ रहे बच्चे आत्मघाती होते हैं, हमलावर नहीं। ऐसे बच्चों में आत्महत्या की जबरदस्त आदत हो जाती है। एक जुनून हावी हो जाता है, जो आत्महन्ता भाव ही भड़काता है, आत्महत्या नहीं। पीड़ित व्यक्ति कभी भी हमलावर भाव नहीं भड़का सकता। वह तिल-तिल कर मौत के करीब आता जाता रहता है।

[illegible]

सच बात तो यह है यह पूरी खबर लखनऊ की पुलिस-टीम की ब्रीफिंग पर लिखी गई है। लेकिन इस पत्रकार ने यह भी लिख दिया है कि इस पूरे मामले में काउंसलिंग कर रही टीम के सदस्यों ने ब्लू व्हेल गेम खेलने की आशंका से इनकार किया है। पत्रकार के अनुसार टीम के अनुसार पूरा परिवार एक कमरे में मकान में रह रहा है और स्मार्टफोन भी इस घर में नहीं है। यह भी पता चला है कि घर में एक लैपटॉप जरूर है, लेकिन वह बेहद पुरानी मॉडल का है। और करीब साल भर से खराब बंद है।

अंत में सच यही है कि इस खबर में पुलिस के उच्चाधिकारियों की शह में बिल्कुल पुलिसिया अंदाज में यह खबर लिखी गई है। जैसा पुलिस ने अपना पिंड छुड़ाने के लिए बोल दिया, इस पत्रकार ने जस का तस सांप मारा है।

[illegible]

Written by कुमार सौवीर
Saturday, 20 January 2018 13:48

□□□-□□□□ □□ □□□□□□□□